09.07.2016
10.07.2016.

बी०ए० - खण्ड - II
अर्थशास्त्र (सम्मान)
भारतीय अर्थशास्त्र
द्वितीय पत्र

डॉ० विपिन कुमार
प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग
आर० आर० एस० कॉलेज, मोकामा
पी०पी०यू०, पटना।

Importance and Role of Agriculture in Indian Economy:

कृषि हमारे देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। वर्ष 2007 में देश के जी.डी.पी. में कृषि एवं सहायक क्षेत्रों की हिस्सेदारी 16.6 प्र.श. था और इस क्षेत्र से लगभग 52 प्र.श. लोग जुड़े थे। वर्ष 2013-14 में देश के सकल घरेलू उत्पाद (जी.डी.पी.) में कृषि और इसके सहायक क्षेत्रों की हिस्सेदारी 13.09 प्र.श. से कम हुई। किसानों की संख्या जो वर्ष 2001 में 12.73 करोड़ थी वह घटकर वर्ष 2011 में 11.87 करोड़ रह गयी। अर्थात कृषि राष्ट्रीय आय का एक प्रमुख स्रोत है। इसका देश के राष्ट्रीय आय में भागीदारी लगभग 22 प्र.श. है और आजीविका के क्षेत्र में करीब 60 प्र.श. लोगों का जुड़ाव है। वहीं ब्रिटेन और अमेरिका जैसे विकसित देशों में बहुत ही छोटी जनसंख्या ~~मात्र~~ क्रमशः 2 एवं 3 प्रतिशत लोग इस क्षेत्र से जुड़े हुए हैं।

हमारे देश में कृषि क्षेत्र पूरे देश को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। कृषि उत्पादन मुद्रास्फीति की दर पर अंकुश रखता है, उद्योगों को शक्ति प्रदान करता है, कृषक की आय में वृद्धि करता है तथा रोजगार प्रदान करता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि कृषि क्षेत्र का हमारे देश के आर्थिक महत्व के साथ-साथ सामाजिक महत्व भी है। यह क्षेत्र निर्धनता उन्मूलन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है-- कारण स्पष्ट है इस क्षेत्र में अधिकांश गरीब लोग ही कार्यरत हैं और यदि कृषि क्षेत्र का विकास होगा तो निर्धनता भी काफी कम हो जाएगी या समाप्त हो जाएगी।

आज हमारा देश भारत खाद्यान्न के मामले में आत्मनिर्भर है हालांकि अप्रत्याशित रूप से बढ़ती जनसंख्या के लिए लगातार खाद्यान्न की जरूरतों को पूरा करने का दबाव भी हमारे देश पर लगातार बढ़ता जा रहा है। आजादी के बाद, विशेषकर 1960 के बाद शुरू की गयी हरित क्रांति जैसे कार्यक्रमों की भूमिका काफी असरदार साबित हुआ है। आज हम विभिन्न प्रकार के आपदा यथा, बाढ़, सूखा, तथा कोरोना जैसे महामारी से खाद्यान्न के मामले में स्वतः की इसकी आपूर्ति सरलतापूर्वक प्रभावित लोगों [illegible] करने में सक्षम हैं। यह भी स्पष्ट है कि कृषि क्षेत्र किसी देश के आर्थिक विकास की प्रक्रिया में एक रणनीतिक भूमिका अदा करती है। आज के विकसित देशों को उन्नत बनाने में पहले कृषि क्षेत्र के सहारे ही उन्नति एवं समृद्धि आयी है। इसलिए आज के अल्पविकसित या विकासशील देशों में खासकर भारत जैसे देश के आर्थिक विकास में इसकी भूमिका और महत्व काफी प्रभावी है। इसलिए हम यह कह सकते हैं कि जहाँ प्रति व्यक्ति वास्तविक आय कम है, कृषि और अन्य प्राथमिक उद्योगों पर जोर दिया जा रहा है।

21
SATURDAY - MARCH
WK-12 081-285

"कृषि उत्पादन में वृद्धि और ग्रामीण समुदाय की प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि, औद्योगीकरण और शहरीकरण के साथ, औद्योगिक उत्पाद में वृद्धि की मांग को जन्म देता है।" – डॉ. उज्जवल सिंह
प्रो. रोडारो, लुईस, नर्क्से एवं किंडलबर्गर जैसे अर्थशास्त्रियों का भी यह मानना है कि कृषि कई मायनों में आर्थिक विकास में अपना योगदान देती है। हमारे देश के आर्थिक विकास में कृषि की प्रमुख भूमिकाएं निम्नांकित हैं :

1. राष्ट्रीय आय में महत्वपूर्ण योगदान
2. कृषि आधारित उद्योगों के लिए कच्चे माल की आपूर्ति।
3. खाद्यान्न की आपूर्ति
4. रोजगार का महत्वपूर्ण एवं सबसे बड़ा क्षेत्र (विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में)।
5. मुद्रा स्फीति को नियंत्रित करने में सहायक
6. अधिशेष का प्रावधान।
7. जनशक्ति का बदलाव।

22
SUNDAY 082-284

8. आधारभूत संरचना का निर्माण
9. पूंजी की कमी को दूर करने में सहायक
10. असमानता को कम करने में सहायक।
11. लोकतांत्रिक धारणाओं पर आधारित।
12. प्रभावी मांग बनाये रखने में सहायक।
13. आर्थिक मंदी को दूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका।
14. देश के विदेशी मुद्रा को अर्जित करने का प्रमुख स्रोत
15. कृषि उत्पाद का निर्यात क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान।
16. पूंजी निर्माण में सहायक
17. औद्योगिक उत्पाद का प्रमुख व्यापार विस्तार में सहायता।

स्पष्टतः उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर निष्कर्ष के तौर पर हम यह कह सकते हैं कि किसी भी देश के आर्थिक विकास में कृषि क्षेत्र की भूमिका काफी महत्वपूर्ण होती है। यहाँ तक कि विकसित देशों ने भी कृषि के विकास पर काफी बल दिया है। "मुडर" के अनुसार, "गैर-कृषि श्रम शक्ति बढ़ने, औद्योगिक उत्पादन के लिए कच्चे माल और शेष अर्थव्यवस्था के विकास का समर्थन करने के लिए कर राजस्व और विदेशी मुद्रा अर्जित करने और बढ़ते बाजार उपलब्ध कराने के लिए कृषि की उन्नति आवश्यक है। वरन् निर्माण के क्षेत्र में भी इसकी भूमिका काफी सहयोगी एवं उपयोगी है।"//